राशोबा शिक्षण महाविद्यालय

18वें वार्षिक उत्सव में प्रस्तुत प्रतिवेदन

(07 अप्रैल 2024)

Address- 9th K.M. Stone, Hisar Road, Sirsa-125055 (Haryana)

Website- www.rashoba.in, **E-mail-** rashobacollege@yahoo.com **Contact No.** 97290-46722

मंच पर विराजमान राशोबा शिक्षण महाविद्यालय की प्रबंधक समिति के आदरणीय पदाधिकारी, गवर्निंग बॉडी के माननीय सदस्य, सुयोग्य अध्यापक वृन्द, आप सभी को सादर प्रणाम। प्रिय छात्रा–अधियापिकाएँ तथा छात्र–अध्यापक आप सभी को स्नेह प्रेषित करता हूं।

आप सभी छात्र–अध्यापक एवं छात्रा–अधियापिकाएँ निःसंदेह रुप से कह सकते हैं कि आज तक आपने स्नातक एवं स्नातकोत्तर तक अनेक सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण की होगी, लेकिन राशोबा शिक्षण महाविद्यालय आपके जीवन में अविस्मरणीय स्मृतियों व सकारात्मक अनुभवों से जुड़ा रहेगा, जिन्हें जीवन में कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा। आप भाग्यशाली हैं कि आपको राशोबा में प्रवेश मिला। महाविद्यालय की प्रबंधक समिति के अनेक सदस्यों से आपकी भेंट हुई तथा उनके विचारों ने आपको प्रभावित किया। महाविद्यालय अध्यक्षा सुश्री कुमुद बंसल जी की जीवन शैली, विचार, उनकी सशक्त व प्रभावशाली कार्यप्रणाली ने हमारे मानसपटल पर अमिट छाप छोड़ी है। आपने यहाँ शिक्षा तो ग्रहण की ही और साथ ही जीवन को एक नए दृष्टिकोण से देखने की समझ भी पाई, जो आपके भावी जीवन में हर प्रकार की परिस्थितियों में एक प्रभावशाली अनुभव के रुप में प्रभावित करती रहेगीं।

राशोबा से बहुत कुछ सीखा तथा मौज–मस्ती भी खूब की। हम सब के लिए सौभाग्य का विषय है कि आज हम अपने महाविद्यालय में वार्षिक उत्सव मना रहें है। मेरे लिये गर्व का विषय है कि आप सब के समक्ष वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस प्रतिवेदन को मुख्यतः चार वर्गों में बांटा गया है।

- **शैक्षणिक कलेण्डर**
- **पाठ्यक्रम एवं सह–पाठ्यक्रम गतिविधियां**
- **खेलकूद सम्बन्धित गतिविधियां**
- **कार्यशालायें / विस्तार व्याख्यान**

शैक्षणिक कैलेंडर

अभिविन्यास कार्यक्रम 18 से 20 सितम्बर तक आयोजित किया गया। अभिविन्यास कार्यक्रम के दौराण छात्राध्यापक व छात्राध्यापिकाओं को शैक्षणिक गतिविधियों के बारे में बताया गया। सभी प्राध्यापकों ने अपने–अपने विषय की रुपरेखा रखी। उस विषय में आने वाली कठिनाईयों तथा आनंदों से परिचित करवाया। महाविद्यालय द्वारा निर्धारित किए गए सभी नियम बताए गए। महाविद्यालय को विद्यार्थियों से क्या अपेक्षा है, इस विषय पर भी चर्चा की गई। सभी विद्यार्थियों को तीन सदनों में बांटा गया। मीरा बाई

सदन, गुरु गोबिन्द सिंह सदन और महर्षि अरविन्दों सदन। इन तीनों सदनों का उत्तरदायित्व छात्रों को सौंपा गया। यह अभिविन्यास कार्यक्रम महाविद्यालय तथा छात्राध्यापकों के बीच सेतु का कार्य करता है।

Ist Year	
Classes	14.09.2023
Micro Teaching	05.11.2023 to 19.11.2023
Talent Hunt Competition	14.11.2023 & 15.11.2023
Simulated Lesson	21.11.2023 to 22.11.2023
Discussion Lesson	23.11.2023 and 23.12.2023
Teaching Practice	25.11.2023 to 23.12.2023
	23001 to 23050 RSD Sen. Sec. School, Sirsa.
	23051 to 23100 GRG Sen. Sec. School, Sirsa.
First House Test	01.01.2024 to 10.01.2024
Classes	11.01.2024 to 20.04.2024
Second House Test	21.04.2024 to 30.04.2024
Internal Practical	01.05.2024 to 02.05.2024
One Assignment Work was given to each student.	

IInd Year	
Classes	01.09.2023 to 20.10.2023
1st House Test	21.10.2023 to 31.10.2023
Internship	01.11.2023 to 28.02.2024
Classes	01.03.2024 to 20.04.2024
2nd House Test	21.04.2024 to 30.04.2024
Internal Practical	01.05.2024 to 02.05.2024
One Assignment Work was given to each student.	

❖ पाठ्यक्रम एवं सह–पाठ्यक्रम गतिविधियां

सत्र 2023–24 में अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए सभी कार्यक्रमों में छात्र अध्यापक/छात्र अधियापिकाओं ने अपनी क्षमता व रूची अनुसार हिस्सा लिया। प्राचार्य के आदेशानुसार पूरे सत्र को छहः भागों में विभक्त किया गया तथा प्रत्येक भाग के लिए दो सहायक प्रोफेसर नियुक्त किये गये।

सितम्बर–अक्तूबर – डॉ. राकेश बड़सरा, श्रीमति मेनका

नवम्बर–दिसम्बर	– डॉ. राजेन्द्र, श्रीमति रूचिका
जनवरी–फरवरी	– डॉ. भुवेन्द्र, श्रीमति पिंकी
मार्च–अप्रैल	– श्री केलाश, श्रीमति नेहा
मई–जून	– डॉ. संतोष कुमारी, श्री नरेन्द्र सिंह
जुलाई–अगस्त	– श्रीमति प्रिति रानी, श्री साहिल गौंडवाल

❖ 05 सितम्बर 2023

सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन के जन्मदिन के उपलक्ष में अध्यापक दिवस मनाया गया। शिक्षक दिवस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. कुमुद बांसल ने कहा कि शिक्षक का हमारे जीवन में अमूल्य योगदान है। शिक्षकों के बिना यह मानव जीवन सार्थक नहीं है। हर किसी के जीवन में एक गुरु या शिक्षक का होना बेहद आवश्यक है। एक अच्छे अध्यापक में चरित्रवान, ज्ञानवान, अच्छे हावभाव एवं धैर्य के गुण होने चाहिए। उन्होंने कहा कि मुझे गर्व है कि मैं एक शिक्षक हूँ।

❖ 14 सितम्बर 2023

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका विषय रहा 'हिन्दी भाषा व विकास की संभावनाएं'। इस विषय पर छात्राध्यापकों द्वारा भी अपने विचार प्रस्तुत किए गए। मुख्यअतिथि डॉ. लाल चन्द गुप्त मंगल, जो प्रबंध समिति के सदस्य हैं ने कहा कि हम सभी मिलकर हिंदी दिवस के उत्सव को मनाने के लिए इकट्ठे हुए थे। जिसका मुख्य उद्देश्य हमारी राष्ट्रीय भाषा हिंदी के महत्व को समझना, समझाना और प्रसारित करना है। आज हमें इस उपलक्ष्य में एक साथ आगे बढ़ना है। हिंदी हमारी सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान का भी प्रतीक है। यह भाषा हमारे देश की विविधता को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिंदी के महत्व को समझने के लिए हमें सिर्फ उसकी बड़ी और विशाल उपस्थिति को देखना ही काफी नहीं है, बल्कि हमें इसके गहरे अर्थ और उसके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक प्रभावों को भी समझना चाहिए। हिंदी भारतीय समाज के सभी वर्गों और क्षेत्रों में अपनी पहचान बना चुकी है। यह वह भाषा है जिसने हमें अपने देशीय मूल्यों, अदाकारी, संस्कृति और विचारधारा को संकलित रूप में समझाया है। हिंदी के महत्व को समझने के साथ–साथ हमें इसे सुरक्षित रखने और उसके विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता भी दिखानी चाहिए। हमें यह याद रखना चाहिए कि हिंदी का सम्मान उसके प्रयोग में और समर्थन में भी है।

इस अवसर पर छात्र/छात्राओं द्वारा उद्धोष भी तैयार किये गये।

- हिंदी हमारी शान, हम सबकी पहचान।
- हिंदी की बातें, दिलों को छू जाती हैं।
- हर भाषा का मान, हिंदी का सम्मान।
- हिंदी की बोली, हमारी हमजौली।
- हिंदी के बिना, भारत अधूरा।
- हिंदी बोलो, मन खोलो।

❖ **24 सितम्बर 2023,**

आज का दिन विश्व नदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। नदियां हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। नदियां जीवन दायिनी हैं। प्राकृतिक रुप से बहुत सारे जीव–जन्तु और प्राणी जल के लिए नदियों पर ही निर्भर हैं, लेकिन पर्यावरण में फैलता हुआ प्रदूषण नदियों के लिए अभिशाप बन गया है। सबको जीवन देने वाली नदियों का अस्तित्व खुद खतरें में हैं। कुछ नदियां अत्यधिक प्रदूषित हो चुकी हैं तो कुछ लुप्त होने की कगार पर हैं। ऐसे में नदियों का सरंक्षण करना अति आवश्यक हो गया है।

❖ **01 अक्तूबर 2023**

02 अक्तूबर को महात्मा गांधी व पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादूर शास्त्री जी के जन्मोत्सव पर 'स्वच्छ भारत अभियान' को अपना उद्देश्य मानकर सफाई अभियान चलाया गया, जिसमें छात्र–छात्राओं ने अपनी अहम् भूमिका निभाई।

❖ **10 अक्तूबर 2023**

महाविद्यालय में 10 अक्तूबर को विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं, अध्यापकगण व सभी ऑफिस स्टाफ को स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी देते हुए मुख्य अतिथि डॉ. राजेश गुप्ता ने कहा कि कोविड काल के बाद सभी के मानसिक स्वास्थ्य पर असर अधिक देखने को मिला। वर्तमान जीवनशैली में दबाव, चिंता और किसी तरह की परेशानी के कारण लोग मानसिक बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। उन्होनें आगे कहा कि मानसिक विकार शरीर पर प्रभाव डालने के साथ ही व्यक्ति के मन में आत्महत्या तक के ख्याल आने का कारण बन जाते हैं। इन्हीं मानसिक विकारों के प्रति लोगों के बीच जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस मनाया

जाता है। इसका उद्देश्य लोगों को मानसिक स्वास्थ्य के महत्व पर जागरूक करना और मानसिक बीमारियों के बारे में जानकारी प्रदान करना है।

❖ **23 अक्तूबर 2023**

महाविद्यालय के स्थापना दिवस पर महाविद्यालय के उपाध्यक्ष श्री अरविन्द बंसल जी अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज हम यहाँ महाविद्यालय की 18वीं वर्षगांठ मनाने के लिए बहुत गर्व और खुशी के साथ एकत्रित हुए हैं। आज का दिन चिंतन, उत्सव और प्रेरणा का दिन है, क्योंकि हम अपने अतीत का सम्मान करते हैं, अपने वर्तमान को स्वीकार करते हैं और अपने भविष्य की कल्पना करते हैं। हमारा महाविद्यालय निरंतर सुधार और नवाचार के लिए प्रतिबद्ध है। हम नए कार्यक्रमों, अत्याधुनिक सुविधाओं और अत्याधुनिक शोध में निवेश कर रहे हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हमारे छात्र आधुनिक दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित हों। हम अपने सामुदायिक आउटरीच कार्यक्रमों को भी मजबूत कर रहे हैं, साझेदारी को बढ़ावा दे रहे हैं और समग्र विकास के अवसर पैदा कर रहे हैं। हमें अपनी सामूहिक उपलब्धियों और अपने संस्थापकों की भावना से प्रेरित होना चाहिए। अंत में उन्होनें कहा कि वे उन सभी के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहते हैं जिन्होंने महाविद्यालय में अपना योगदान दिया है। साथ मिलकर, हमने एक ऐसी विरासत बनाई है जिस पर हम सभी गर्व कर सकते हैं।

❖ **11 नवम्बर 2023**

सभी के हृदय को प्रकाश व उल्लास से भर देने वाला पर्व 'दीपावली' महाविद्यालय में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। यह पावन पर्व मन को आलौकिक करने तथा धन–धान्य व संपति की देवी महालक्ष्मी के पूजन का है। इस अवसर पर छात्र–छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। शोभा देवी रामानंद बंसल फाउंडेशन की तरफ से राशोबा शिक्षण महाविद्यालय के प्राध्यापक वर्ग व कर्मचारी वर्ग को उपहार भेंट किए गए व सभी के लिए स्वरुची भोजन का प्रबन्ध भी किया गया। इस अवसर पर अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया, जैसे–रंगोली, दीया–सज्जा, Poster Making, Card Making व Fresh Flower Competition.

❖ **01 दिसम्बर 2023**

हर साल 1 दिसंबर को दुनिया विश्व एड्स दिवस मनाती है। दुनिया भर में लोग एचआईवी से पीड़ित लोगों के प्रति समर्थन दिखाने और एड्स से संबंधित बीमारियों से मरने वालों को याद करने के लिए एकजुट होते हैं।

❖ **02 दिसम्बर 2023**

प्रदूषण विश्व के सामने एक बड़ी समस्या है। भारत के राष्ट्रीय स्वास्थ्य पोर्टल के अनुसार, दुनिया भर में हर साल लगभग 7 मिलियन लोग वायु प्रदूषण के कारण मर जाते हैं। इसे पर्यावरण प्रदूषण के नाम से भी जाना जाता है। हम प्रदूषण को पर्यावरण में किसी भी पदार्थ, चाहे ठोस, तरल, गैस, या ऊर्जा के किसी भी रूप जैसे गर्मी, ध्वनि आदि के शामिल होने के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। प्रदूषण के स्तर को कम करने के लिए. हमें प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए विचार और योजनाएँ बनानी चाहिए।

❖ **22 दिसम्बर 2023**

भारत में हर साल 22 दिसंबर को राष्ट्रीय गणित दिवस मनाया जाता है। भारत में राष्ट्रीय गणित दिवस श्रीनिवास रामानुजन की जयंती के रूप में मनाया जाता है। भारत में राष्ट्रीय गणित दिवस मनाने की शुरुआत 2012 में पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह द्वारा की गई। श्रीनिवास रामानुजन की 125वीं जयंती पर पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने घोषणा की कि भारत में हर साल 22 दिसंबर को राष्ट्रीय गणित दिवस मनाया जाएगा। तब से हर वर्ष श्रीनिवास रामानुजन की जयंती को राष्ट्रीय गणित दिवस के रूप में मनाया जा रहा है।

गणित में रामानुजन का असाधारण योगदान आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का काम करता है। आइए हम अपने दैनिक जीवन में गणित के महत्व पर विचार करें। गिनती की सरलता से लेकर उन्नत समीकरणों की जटिलता तक, गणित वैज्ञानिक प्रगति और तकनीकी नवाचार की नींव बनाता है।

❖ **24 दिसम्बर 2023**

हर साल 24 दिसंबर को भारत में राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस मनाया जाता है। 24 दिसंबर को देश में राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस इसलिए मनाया जाता है क्योंकि 24 दिसंबर 1986 को उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम विधेयक पारित किया गया था। इस दिन को मनाने का उद्देश्य उपभोक्ताओं के महत्व, अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूकता फैलाना है। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम

उपभोक्ताओं को उनके अधिकार और सुरक्षा देने के लिए लागू किया गया है। इस अधिनियम के तहत अब कोई भी उपभोक्ता अपने हक के लिए शिकायत कर सकता है। इस अवसर पर श्री अमित गोयल, वरिष्ठ अधिवक्ता मुख्यअतिथि रहें।

❖ **12 जनवरी 2024**

हर वर्ष 12 जनवरी को युवाओं कि प्रेरणास्त्रोत स्वामी विवेकानंद की जयंती मनाई जाती है। इस दिन को भारत में राष्ट्रीय युवा दिवस (National Youth Day 2024) के तौर पर भी मनाया जाता है। स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कोलकता में पिता विश्वनाथ दत्त और माता भुवनेश्वरी देवी के घर हुआ था। योग, राजयोग और ज्ञानयोग जैसे ग्रंथों की रचना करके स्वामी विवेकानंद ने युवा जगत को नई राह दिखाई जिसका भारतीय जनमानस पर जबरदस्त असर हुआ और आगे भी युगों युगों तक इसका प्रभाव रहेगा। स्वामी जी केवल एक संत ही नहीं बल्कि एक महान देशभक्त, दार्शनिक, वक्ता, विचारक, लेखक भी थे। स्वामी विवेकानंद के ओजपूर्ण विचार हमेशा से युवाओं को प्रेरित करते रहे हैं इसलिए साल 1985 में भारत सरकार ने स्वामी जी के जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के तौर पर मनाने का फैसला लिया। वह बेहद कम उम्र में विश्व विख्यात प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु बन गए थे। 1893 में अमेरिका के शिकागो में हुए विश्व धार्मिक सम्मेलन में उन्होंने जब भारत और हिंदुत्व का प्रतिनिधित्व किया तो उनके विचारों से पूरी दुनिया उनकी ओर आकर्षित हुई। वेदांत और योग को पश्चिमी संस्कृति में प्रचलित करने में उन्होंने बेहद अहम योगदान दिया।

❖ **13 जनवरी 2024**

लोहड़ी पर्व महाविद्यालय में बड़े पारम्परिक ढंग से हमेशा मनाया जाता है। इस अवसर पर महाविद्यालय अध्यक्षा सुश्री कुमुद बंसल, उपाध्यक्ष श्री अरविन्द बंसल व कोषाध्यक्षा श्रीमती वसुधा बंसल उपस्थित थे। श्रीमति वसुधा बंसल जी ने इस पर्व का महत्व बताते हुए कहा कि इस दिन सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायन की ओर प्रस्थान करता है और शीतकाल पर सुनहरी धूप की विजय यात्रा प्रारम्भ होती है। और साथ ही बताया कि भारत के त्यौहारों में लोहड़ी का त्यौहार विशेष पहचान रखता है। यह विशेष तौर से भारत के उतर भाग में मनाया जाता है। इस अवसर पर छात्राध्यापिकाओं ने गिद्दा प्रस्तुत किया और बोलियां

गायीं। इसके पश्चात् सभी विद्यार्थियों ने सुन्दरी–मुन्दरी गीत गाकर लोहड़ी ली और एक–दूसरे को इस पर्व की बधाई दी।

❖ **23 जनवरी 2024**

23 जनवरी को उस शख्स की जयंती है जिसके आह्वान पर हजारों लोग आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। जिसके जादुई और अद्भुत नेतृत्व कौशल ने भारतीय स्वतंत्र संग्राम में नई जान फूंकी। 23 जनवरी को स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती होती है। कृतज्ञ राष्ट्र उन्हें याद करता है। नेताजी की जीवनी, उनके क्रांतिकारी विचार और उनका कठोर त्याग व बलिदान भारतीय युवाओं के लिए बेहद प्रेरणादायक रहा है और आगे भी रहेगा। आज के दिन पूरा देश पराक्रम दिवस भी मना रहा है। भारत सरकार ने वर्ष 2021 में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती को पराक्रम दिवस के तौर पर मनाने की घोषणा की थी। सुभाष चंद्र बोस ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ऐसे कई नारे दिए जिन्होंने आजादी की लड़ाई में नई जान फूंकी जैसे तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा....!, और जय हिन्द! ये ऐसे नारे थे जिन्होंने आजादी की लड़ाई को तेज किया और उसे धार दी।

❖ **25 जनवरी 2024**

गणतन्त्र दिवस भारत का एक राष्ट्रीय पर्व है। भारतीय गणतंत्र दिवस का इतिहास काफी रोचक है। इसकी शुरुआत 26 जनवरी 1950 को हुई थी। जब हमारे देश में 'भारत सरकार अधिनियम' को हटाकर भारत के संविधान को लागू किया गया। तब से इसी के उपलक्ष्य में हमारे देश के संविधान और गणतंत्र को सम्मान प्रदान करने के लिए हर वर्ष 26 जनवरी के दिन गणतंत्र दिवस का कार्यक्रम मनाया जाता है। इस दिन महाविद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया तथा सम्मानपूर्वक राष्ट्रीय गान गाया।

❖ **14 फरवरी 2024**

महाविद्यालय में बंसत पंचमी का पर्व मनाया गया। बसंत पंचमी हिन्दुओं का लोकप्रिय त्यौहार है, जिसे बसंत पंचमी और सरस्वती पूजा के नाम से भी जाना जाता है। बसंत पंचमी मुख्य रूप से प्रकृति और भारतीय परंपरा से जुड़ा हुआ त्योहार है। हिन्दू पंचांग के अनुसार, माघ महीने में शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को विद्या की देवी सरस्वती का जन्म हुआ था। इस दिन सरस्वती की पूजा की जाती है। बसंत पंचमी से बसंत ऋतु प्रारम्भ होती है। बसंत पंचमी बसंत ऋतु की ताजगी एवं खूबसूरती का उत्सव होता है। जब सूरज की किरणें और दिनों से उजली हों, सुबह–सवेरे कोयल कुह–कुह बोल रही हो, खेतों में पीली सरसों

लहरा रही हो, बागों में पीले फूल खिल उठे हों, पेड़ों पर अजब हरियाली हो, तो हमें समझ जाना चाहिए कि बसंत पंचमी का आगमन हो चुका है। बसंत पंचमी का आगमन सभी के मन में एक अलग ही तरह की सकारात्मक ऊर्जा भर देता है। बसंत पंचमी खुशियों के साथ–साथ शिक्षा, ज्ञान और समृद्धि का भी त्यौहार है। इस अवसर पर श्री पंकज बंसल, महासचिव, शोभा देवी रामानन्द बंसल फउंडेशन, श्रीमति सीमा बंसल, आदरी कोषाध्यक्ष, राशेभा शिक्षण महाविद्यालय उपस्थित रहे।

❖ **21 मार्च 2024**

म्हाविद्यालय में विश्व कविता दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कविता दिल के सबसे करीब की बात होती है । जो बात हम कई पन्नों में व्यक्त नहीं कर सकते वो कविता की एक पंक्ति कर देती है। कविता से ही सत्ता हिल जाती है और दिल भी महसूस करने लगते हैं। भले ही इस नए दौर में सबकुछ मशीनी हो गया हो और जीवन इंटरनेट की जद में आ चुका हो, हमारे मन और आत्मा को एक सुंदर कविता की जरूरत महसूस होती ही है। कविता भीतर की ताकत है। कहना गलत नहीं होगा कि चाहे कितना ही अंधेरा क्यों न हो कविता अपना रास्ता बना ही लेती है। उपरोक्त उद्गार मुख्य वक्ता डॉ. कुमुद रामानन्द बंसल ने प्रकट किये।

❖ **22 मार्च 2024**

पानी का हमारी लाइफ में क्या रोल है हर किसी को पता है. दुनिया का 70 फीसदी हिस्सा पानी से घिरा हुआ है और इसमें 97 फीसदी पानी ऐसा है जो पीने लायक नहीं है. वहीं 3 फीसदी पानी पर पूरी दुनिया जीवित है. पानी के बिना जीवन की कल्पना करना अंसभव है और इसके महत्व को समझते हुए हर साल 22 मार्च को वर्ल्ड वाटर डे सेलिब्रेट किया जाता है।

❖ **23 मार्च 2024**

राशोबा शिक्षण महाविद्यालय में होली उत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। जिसमें कैमिकल रंगों के स्थान पर गुलाल व फूलों से होली मनाई गई। विद्यार्थियों ने गानों पर डांस भी किया और एक–दूसरे को चंदन व गुलाल लगाकर और फूल बरसाकर होली मनाई। पूरे महाविद्यालय में खुशियों और रंगों का माहौल था। इस अवसर पर महाविद्यालय की अध्यक्षा डॉ. कुमुद बंसल, उपाध्यक्ष श्री अरविंद बंसल, कोषाध्यक्षा श्रीमती वसुधा बंसल, महासचिव श्री पंकज बंसल, सीमा बंसल उपस्थित थे।

❖ 15 मई 2024

पहली बार अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस सन् 1994 में संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएन) द्वारा जीवन में परिवार के महत्त्व को बताने के लिए मनाया गया था। जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों को परिवार के महत्व और उसके मूल्य को समझाना है। प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस 15 मई को आयोजित किया जाता है।

यह दिन परिवारों से संबंधित मुद्दों के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने और परिवारों को प्रभावित करने वाली आर्थिक, सामाजिक और जनसांख्यिकीय प्रक्रियाओं के ज्ञान को बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है। साथ ही ये दिन दुनिया भर में परिवारों की परिस्थितियों से जुड़ी समस्याओं को भी उजागर करता है। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा परिवारों को दिए जाने वाले महत्व को दर्शाने के लिए हर साल 15 मई को अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस मनाया जाता है। इस दिन दुनिया भर में परिवारों के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। संयुक्त राष्ट्र उन विषयों पर काम करता है जो दुनिया भर में परिवारों की भलाई के लिए महत्वपूर्ण हैं, जैसे कि स्वास्थ्य, शिक्षा, बच्चों के अधिकार, लैंगिक समानता, कार्य–परिवार संतुलन और सामाजिक समावेश आदि।

❖ खेलकूल सम्बन्धित गतिविधियां

22 मार्च 2024 को महाविद्यालय में वार्षिक खेल–कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। वार्षिक खेल–कूद प्रतियोगिता में 100 मी0 दौड़, बैक रेस, गोला फेंक, भाला फेंक डीस्क थ्रो, Three Leg Race, Lemon Race, Jump Race (Boys), रस्सा कस्सी व लड़कों की कब्बड़ी का आयोजन किया गया। इसके बाद one minute game में spoon game, मटर छीलना व गुब्बारे फुलाना प्रतियोगिताएं करवाई गई। इन प्रतियोगिताओं में मीरा बाई हाउस का दबदबा रहा।

Sr.No.	Game	Roll No.	Name	Rank	Medal
1	100 Mtr Race Boys	22003	Anurag	First	Gold
		22011	Praveen Kumar Budania	Second	Silver
		23008	Sandeep Kumar	Second	Silver
		23038	Mukesh	Third	Bronze
		22019	Navdeep Singh	Third	Bronze
2	100 Mtr Race Girls	22001	Preety	First	Gold
		23017	Nisha	Second	Silver

		22021	Anchal	Third	Bronze
3	Three Leg Race Boys	22039	Rajveer Singh	First	Gold
		22046	Sachin Suthar	First	Gold
		23040	Pankaj	Second	Silver
		23054	Lakshay	Second	Silver
		23076	Akshay Kant	Third	Bronze
		23062	Krashnpal Singh	Third	Bronze
4	Three Leg Race Girls	22034	Preeti Yadav	First	Gold
		23011	Ashima	First	Gold
		22042	Deepali Middha	Second	Silver
		23017	Nisha	Second	Silver
		22021	Anchal	Third	Bronze
		23072	Nancy Phattela	Third	Bronze
5	Back Race Boys	23078	Sajan Kumar	First	Gold
		22015	Devender Kumar	Second	Silver
		22036	Vijay Kumar	Third	Bronze
6	Back Race Girls	22034	Preeti Yadav	First	Gold
		23011	Ashima	Second	Silver
		22042	Deepali Middha	Third	Bronze
7	गोलाफेंक (Boys)	22060	Amiya Snehi	First	Gold
		23099	Bharat Bhushan Pal	Second	Silver
8	भालाफेंक (Boys)	23082	Raj Kamal Ranjan	First	Gold
		22016	Parhlad Singh	Second	Silver
		22024	Jaskaran Singh	Third	Bronze
9	Diskuss Throw Boys	22057	Anil Kumar	First	Gold
		23096	Mandeep Singh	First	Gold
		22014	Harish Kumar	Second	Silver
		23009	Dimple	Third	Bronze
10	Lemon Race Boys	22005	Balram	First	Gold
		23060	Pankaj	Second	Silver
		23074	Sunil	Third	Bronze
11	Lemon Race Girls	23073	Himanshu Rani	First	Gold
		23072	Nancy Phattela	Second	Silver
		22023	Sonali Kamboj	Third	Bronze
12	Skipping Boys	23019	Vikash Kumar	First	Gold
		23048	Rishi Kumar	Second	Silver
		22035	Rajneesh Kumar	Third	Bronze

13	Skipping Girls	22044	Rakhi	First	Gold
		22025	Lilawati	Second	Silver
14	Ballon Game Boys	23006	Suraj Kumar	First	Gold
		22030	Sunil Kumar	Second	Silver
15	Ballon Game Girls	22031	Sonjuhi	First	Gold
		23018	Neha Kamboj	Second	Silver
16	Rassakashi	22010	Dimpal	Winner team	Gold
		22047	Ravinder Kumar		Gold
		22048	Dinesh Kumar		Gold
		22051	Anup		Gold
		23010	Rajpal		Gold
		23024	Shailendra Kumar		Gold
		23030	Naresh Kumar		Gold
		23034	Manish		Gold
		23059	Vinod Kumar		Gold

❖ कार्यशालायें / विस्तार व्याख्यान

Sr. No.	Date	Time	Name	Topic
01	18-19 October, 2023	11:00 a.m. to 1:00 p.m.	Dr. Rajesh Gupta, Sirsa.	Aayurved and Holistic Health.
02	19 January, 2024	03:00 p.m. to 4:30 p.m.	Mr. Parveen Kumar	Process of Micro Teaching.
03	19-20 January, 2024	11:00 a.m. to 1:00 p.m.	Dr. Raj Kumar, Sirsa.	Effects of Yogasan and Pranayam on Health.
04	28 January, 2024	11:00 a.m. to 1:00 p.m.	Dr. Kavita, Principal, D.M. College of Education, Gurugram	Governance and Quality Education.
05	29 January, 2024	11:30 a.m. to 1:00 p.m	Ms. Kiran Mehndiratta, Principal, G.R.G National Girls Sr. Sec. School, S.E.S Parishar, B-Block, Sirsa	Capacity Building Program in Classroom.
06	30 January, 2024	11:30 a.m. to 1:00 p.m		Happy Classroom.

07	10 February, 2024	11:30 a.m. to 1:00 p.m	Dr. Nisha Goyal, Sirsa.	व्याकरण व वर्तनी की अशुद्धियाँ
08	17 February, 2024	11:30 a.m. to 1:00 p.m	Dr. Kumud Bansal, Director, Rashoba College of Education, Sirsa.	Meditation as Medicion with Special Reference to Pupil Teachers.
09	18 February, 2024	03:00 p.m. to 4:30 p.m.	Dr. Nivedita, Dept.of Education, CDLU, Sirsa.	Ethics
10	01 March, 2024	11:30 a.m. to 1:00 p.m	Dr. Ritu, Dept. of Education, CRSU, Jind.	Pedagogical Tools
11	04 April, 2024	03:00 p.m. to 4:30 p.m.	Ms. Renu Bala, DMA National College, B-Block, Sirsa.	Practical approaches for implementing inquiry-based activities in the classroom.
12	05 April, 2024	03:00 p.m. to 4:30 p.m.		The importance of science literacy and public understanding of science.
13	06 April, 2024	03:00 p.m. to 4:30 p.m.		Role of Science education in developing critical thinking and problem solving skills.
14	11 April, 2024	11:00 a.m. to 3:30 p.m.	Dr. Ranjit Kaur, Prof., Dept. of Education, CDLU, Sirsa.	ICT Mediated Pedagogies and Digital Divide.
15	12 April, 2024	11:00 a.m. to 3:30 p.m.	Dr. Shamshir Singh Dhillon, Associate Prof. Dept. of Education, Central University of Punjab, Bathinda.	Holistic and Multidisciplinary Education in the context of NEP-2020.
16	18 April, 2024	11:00 a.m. to 3:30 p.m.	Dr. Reena, Dept. of Education, BPS Mahila Vishwaidyalaya, Khanpur Kalan	Research Writing.
17	10 May, 2024	10:00 a.m. to 12:30 p.m.	Mr. Ravi Kumar, Assitant, DYW office, CDLU, Sirsa.	Enhancing Capabilities in Office Management.
17	01 June, 2024	02:00 to 4:00 p.m.	Dr. Raj Kumar, Dept. of Education, CDLU, Sirsa.	NAAC and NEP Implementation.

❖ **18 व 19 अक्तूबर 2023**

महाविद्यालय में डॉ. राजेश गुप्ता द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय 'Ayurved and Holistic Health' रहा। डॉ. गुप्ता ने आयुर्वेद का इतिहास बताते हुए कहा कि आयुर्वेद एक प्राचीन चिकित्सा विज्ञान है जो कम से कम 5,000 वर्षों से भारत में प्रचलित है। यह शब्द संस्कृत के शब्द अयुर (जीवन) और वेद (ज्ञान) से आया है। आयुर्वेद, या आयुर्वेदिक चिकित्सा को कई सदियों पहले ही वेदों और पुराणों में प्रलेखित किया गया था। यह बात और हैं कि आयुर्वेद वर्षों से विकसित हुआ है और अब योग सहित अन्य पारंपरिक प्रथाओं के साथ एकीकृत है। इसी के साथ धार्मिक व पवित्र तरीके से उपचार लेने को ही होलिस्टिक हीलिंग कहा गया है। इसमें असंतुलित जीवनशैली को सुंतलित जीवनशैली में बदला जाता है। होलिस्टिक हीलिंग में मनुष्य के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दी जाती है। महाविद्यालय के विद्यार्थियों व कर्मचारी वर्ग ने इस कार्यशाला का बहुत लाभ उठाया।

❖ **19 जनवरी 2024**

महाविद्यालय में श्री प्रवीण कुमार द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय 'Process of Micro Teaching' रहा।

श्री प्रवीन कुमार ने कहा कि हम शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास के एक आवश्यक पहलू– माइक्रो–टीचिंग पर चर्चा करेंगे। यह अभिनव दृष्टिकोण शिक्षण कौशल को निखारने, नई तकनीकों के साथ प्रयोग करने और शिक्षकों के रूप में हमारी प्रभावशीलता को बढ़ाने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। आपके व्याख्यान के मुख्य बिंनु थे– माइक्रो–टीचिंग को समझना, माइक्रो–टीचिंग की प्रक्रिया, माइक्रो–शिक्षण के लाभ।

निष्कर्ष के तौर पर, माइक्रो–शिक्षण शिक्षा के क्षेत्र में पेशेवर विकास और विकास के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है। विशिष्ट शिक्षण कौशल पर ध्यान केंद्रित करके, लक्षित अभ्यास में संलग्न होकर और रचनात्मक प्रतिक्रिया को अपनाकर, शिक्षक अपनी प्रभावशीलता और आत्मविश्वास को बढ़ा सकते हैं। जैसा कि हम अपने शिक्षण प्रथाओं को परिष्कृत करना जारी रखते हैं, आइए हम शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने और अपने छात्रों के जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के साधन के रूप में माइक्रो–शिक्षण की प्रक्रिया को अपनाएँ।

❖ **19 व 20 जनवरी 2024**

महाविद्यालय में डॉ. राज कुमार द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय 'Effects of Yogasan and Pranayam on Health' रहा। डॉ. राज कुमार जी ने अपने विषय के बारे में समझाते हुए कहा कि योगासन, प्राणायाम और ध्यान सेहत के लिए किसी वरदान से कम नहीं हैं। विभिन्न आसनों से हड्डी, मांस–मज्जा और शरीर के भीतरी अंग सशक्त होते हैं। वहीं प्राणायाम से शरीर के भीतर की नाड़ियां सुचारु रूप से कार्य करती हैं। योग डिप्रेशन और एंग्जाइटी जैसे मनोरोगों के इलाज में सहायक है। इस कार्यशाला से विद्यार्थियों व कर्मचारी वर्ग ने बहुत कुछ सीखा।

❖ **28 जनवरी 2024**

महाविद्यालय में डॉ. कविता द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय **'Governance and Quality Education'** रहा। डॉ कविता ने कहा कि शासन और शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। प्रभावी शासन एक मजबूत शैक्षिक प्रणाली के लिए आवश्यक ढांचा और संसाधन प्रदान करता है, जबकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा बदले में सूचित और सक्षम नागरिकों को बढ़ावा देती है जो शासन में सकारात्मक योगदान दे सकते हैं। शिक्षा में शासन की भूमिका यह सुनिश्चित करने में सुशासन महत्वपूर्ण है कि शैक्षिक नीतियाँ समावेशी, न्यायसंगत और प्रभावी हों। यह एक ऐसा वातावरण बनाने के बारे में है जहाँ हर बच्चे को अपनी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना सीखने और आगे बढ़ने का अवसर मिले। इसके लिए आवश्यक है पारदर्शी और जवाबदेह संस्थान व पारदर्शी शासन यह सुनिश्चित करता है कि शैक्षिक निधियों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाए और सभी स्तरों पर जवाबदेही हो। यह भ्रष्टाचार को कम करता है और यह सुनिश्चित करता है कि संसाधन उन स्कूलों और छात्रों तक पहुँचें जिन्हें उनकी सबसे अधिक आवश्यकता है। समावेशी नीतियाँ सुशासन में ऐसी नीतियाँ तैयार करना शामिल है जो हाशिए के समुदायों के छात्रों सहित सभी छात्रों की जरूरतों को पूरा करती हैं। यह शिक्षा की बाधाओं को तोड़ने और यह सुनिश्चित करने के बारे में है कि प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षण अनुभव प्राप्त हो।

शिक्षक प्रशिक्षण को मजबूत बनाएँ व शिक्षक शैक्षिक प्रणाली की रीढ़ हैं। उनके प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास में निवेश करना यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि वे उच्च–गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान कर सकें।

❖ **29 व 30 जनवरी**

महाविद्यालय में श्रीमति किरण मेहंदीरता द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय **'Capacity Building Program in Classroom & Happy Classroom'** रहा।

- **Capacity Building Program in Classroom**

  श्रीमति किरण मेहंदीरता ने कहा कि आज की तेजी से बदलती दुनिया में, शिक्षकों की भूमिका पारंपरिक शिक्षण विधियों से कहीं आगे तक फैली हुई है। अब हमें अपने छात्रों को न केवल ज्ञान से बल्कि उन कौशलों और क्षमताओं से भी लैस करने का काम सौंपा गया है जिनकी उन्हें लगातार विकसित हो रहे परिदृश्य में सफल होने के लिए आवश्यकता है। यहीं पर क्षमता निर्माण की भूमिका आती है।

  आपने कहा कि क्षमता निर्माण से तात्पर्य उन कौशलों, क्षमताओं और संसाधनों को विकसित करने और मजबूत करने की प्रक्रिया से है जिनकी शिक्षकों, छात्रों और संस्थानों को प्रदर्शन में सुधार करने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यकता होती है। कक्षा के संदर्भ में, इसका अर्थ है बेहतर शिक्षण परिणामों को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों, छात्रों और शैक्षिक वातावरण की क्षमताओं को बढ़ाना। हमे क्षमता निर्माण के लिए पेशेवर विकास कार्यशालाएँ, सहयोगात्मक शिक्षण समुदाय, संसाधनों तक पहुँच तथा प्रतिक्रिया और मूल्यांकन।

- **Happy Classroom**

  श्रीमति किरण मेहंदीरता ने कहा कि मैं ऐसी चीज के बारे में बात करना चाहता हूँ जो हमारे सीखने के माहौल के लिए मौलिक है लेकिन अक्सर अनदेखा कर दी जाती हैरू कक्षा में खुशी। एक खुशहाल कक्षा सिर्फ एक ऐसी जगह नहीं है जहाँ छात्र हर दिन आने का आनंद लेते हैंय यह एक समृद्ध जगह है जहाँ सीखने और व्यक्तिगत विकास को अधिकतम किया जाता है। तो, हम ऐसा माहौल कैसे बना सकते हैं और बनाए रख सकते हैं?

  आपने कहा कि कक्षा में खुशनुमा माहौल के लिए सकारात्मक माहौल को बढ़ावा दें, मजबूत रिश्ते बनाएँ, सहयोग और टीमवर्क को प्रोत्साहित करें, एक सुरक्षित और समावेशी वातावरण बनाएँ, सीखने को मजेदार और

आकर्षक बनाएँ, भावनात्मक स्वास्थ्य का समर्थन करें, निर्णय लेने में छात्रों को शामिल करें, विकास की मानसिकता को बढ़ावा दें। इन्हीं कारकों से छात्र कक्षा में प्रसन्नतापूर्वक सीख सकेंगे।

❖ **10 फरवरी 2024**

महाविद्यालय में डॉ. निशा गोयल द्वारा भाषा विज्ञान पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय 'व्याकरण व वर्तनी की अशुद्धियाँ' रहा।

❖ **17 फरवरी 2024**

महाविद्यालय में महाविद्यालय की अक्ष्यक्षा डॉ. कुमुद बंसल द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय 'Meditation as Medicion with Special Reference to Pupil Teachers' रहा। उन्होनें कहा कि आज, मुझे आपसे एक ऐसे विषय पर बात करने का सौभाग्य मिला है, जो व्यक्तिगत कल्याण और व्यावसायिक प्रभावशीलता दोनों के लिए परिवर्तनकारी क्षमता रखता है। 'चिकित्सा के रूप में ध्यान', जिसमें छात्र शिक्षकों पर विशेष जोर दिया गया है।

हमारे आधुनिक जीवन की भागदौड़ में, जहाँ जिम्मेदारियाँ और तनाव अक्सर टकराते रहते हैं, शांति के पल पाना एक दूर का सपना लग सकता है। यह उन लोगों के लिए विशेष रूप से सच है जो समाज में सबसे प्रभावशाली भूमिकाओं में से एक को निभाने की तैयारी कर रहे हैंकृअगली पीढ़ी को शिक्षित करना। छात्र शिक्षक, जो युवा दिमाग को आकार देने की कगार पर हैं, अक्सर दबावों और चुनौतियों का एक अनूठा सेट का सामना करते हैं। यहीं पर ध्यान को अपने जीवन में एकीकृत करने का महत्व निहित हैकृन केवल एक अभ्यास के रूप में, बल्कि संतुलन और लचीलापन बनाए रखने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में। आपकी कार्यशाला में विद्यार्थियों ने ध्यान को समझा व ध्यान के पीछे के विज्ञान, ध्यान और छात्र शिक्षक के प्रभाव को समझा।

आपने कहा कि ध्यान एक क्षणभंगुर प्रवृत्ति से कहीं अधिक है – यह मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण को बढ़ाने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है। छात्र शिक्षकों के लिए, नियमित अभ्यास के रूप में ध्यान को अपनाना शांति और स्पष्टता की नींव प्रदान कर सकता है, जिससे उन्हें अपने पेशे की मांगों

को अनुग्रह और प्रभावशीलता के साथ पूरा करने में मदद मिलती है। जैसा कि हम भविष्य की ओर देखते हैं, आइए हम ध्यान को न केवल एक अभ्यास के रूप में अपनाएं, बल्कि मन और आत्मा के लिए एक दवा के रूप में अपनाएं।

❖ **18 फरवरी 2024**

महाविद्यालय में डॉ. निवेदिता द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय 'Ethics' रहा। डॉ. निवेदिता बहुत समय से इस महाविद्यालय से जुड़ी हैं। उन्होनें कहा कि उन्हे ऐसे विषय पर बात करने का सम्मान मिला है जो हमारे व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन की आधारशिला है। नैतिकता वह मार्गदर्शक सिद्धांत है जो हमारे कार्यों, निर्णयों और दूसरों के साथ बातचीत को आकार देता है। यह सही, निष्पक्ष और न्यायपूर्ण कार्य करने के बारे में है, तब भी जब कोई नहीं देख रहा हो।

नैतिकता दर्शन की वह शाखा है जो नैतिकता के प्रश्नों और व्यवहार को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों से संबंधित है। यह इस बात से संबंधित है कि व्यक्तियों और समाज के लिए क्या अच्छा है और इसे अक्सर तीन मुख्य क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है। मेटा–एथिक्स, मानक नैतिकता, लागू नैतिकता। विश्वास का निर्माण व नैतिक व्यवहार विश्वास और विश्वसनीयता को बढ़ावा देता है, न्यायपूर्ण समाज का निर्माण व नैतिकता निष्पक्षता और न्याय सुनिश्चित करती है, निर्णय लेने का मार्गदर्शन व नैतिक सिद्धांत कठिन निर्णय लेने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं, जवाबदेही को बढ़ावा देती है व नैतिकता व्यक्तियों और संगठनों को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह बनाती है।

आपने कहा कि नैतिकता का विषय जितना सरल लगता है उतना ही चुनौतिपूर्ण है। परस्पर विरोधी मूल्य व अलग–अलग व्यक्तियों और संस्कृतियों के अलग–अलग नैतिक मूल्य हो सकते हैं, जिससे संघर्ष और दुविधाएँ पैदा हो सकती हैं। दबाव और प्रलोभन, जागरूकता की कमी, जटिल परिस्थितियाँ भी चुनौतियाँ हैं। उन्होनें छात्रों का आहवान करते हुए कहा कि अपने जीवन के सभी पहलुओं में उच्चतम नैतिक मानकों को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हों।

❖ **01 मार्च 2024**

महाविद्यालय में डॉ. रीतू द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय 'Pedagogical Tools' रहा। डॉ. रीतु ने कहा कि वे ऐसे विषय पर चर्चा करने के लिए उत्साहित हूँ जो शिक्षा के भविष्य और हमारे छात्रों की सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं। शैक्षणिक उपकरण रणनीतियों,

विधियों और संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करते हैं जिनका उपयोग शिक्षक सीखने को सुविधाजनक बनाने के लिए करते हैं। ये उपकरण शिक्षण प्रक्रिया को बढ़ाने, छात्रों को जोड़ने और शैक्षिक परिणामों को बेहतर बनाने के लिए डिजाइन किए गए हैं। इनमें पाठ्यपुस्तकों और व्याख्यानों जैसी पारंपरिक विधियों से लेकर इंटरैक्टिव सॉफ्टवेयर और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसी आधुनिक तकनीकें शामिल हैं। प्रभावी शैक्षणिक उपकरण, बढ़ी हुई सहभागिता व छात्रों को जोड़ना, व्यक्तिगत शिक्षण, सक्रिय शिक्षण व सक्रिय शिक्षण, सहयोग और संचार व कई शैक्षणिक, मूल्यांकन और प्रतिक्रिया व प्रभावी मूल्यांकन। शैक्षणिक उपकरणों के उदाहरण में आपने बताया उपकरणों के कुछ उदाहरणों पर नजर डालें जो आज शिक्षा में महत्वपूर्ण प्रभाव डाल रहे हैं। प्रौद्योगिकी–संवर्धित शिक्षण व इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड, टैबलेट और शैक्षिक सॉफ्टवेयर, सहयोगी उपकरण व Google डॉक्स, Microsoft टीम और स्लैक जैसे प्लेटफॉर्म, फ्लिप्ड क्लासरूम व फ्लिप्ड क्लासरूम मॉडल, गेमीफिकेशन, प्रोजेक्ट–आधारित शिक्षण (PBL) व PBL इत्यादि।

आपने आगे कहा कि जबकि शैक्षणिक उपकरण अमूल्य हैं, शिक्षकों की भूमिका इन उपकरणों को अपने शिक्षण अभ्यासों में प्रभावी ढंग से एकीकृत करना है।

❖ 04 से 06 अप्रैल 2024

महाविद्यालय में श्रीमति रेणू बाला द्वारा तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय **'Practical approaches for implementing inquiry-based activities in the classroom., The importance of science literacy and public understanding of science and Role of Science education in developing critical thinking and problem solving skills.'** रहा।

- **Practical approaches for implementing inquiry-based activities in the classroom.**

  श्रीमति रेणू बाला ने अपने विचार रखते हुए कहा कि सक्रिय शिक्षण और आलोचनात्मक सोच के सिद्धांतों पर आधारित यह दृष्टिकोण छात्रों को अपने स्वयं के प्रश्नों और जांच के माध्यम से ज्ञान का पता लगाने और खोजने की अनुमति देता है। आइए कुछ व्यावहारिक तरीकों पर गौर करें जिनसे हम अपनी कक्षाओं में पूछताछ–आधारित गतिविधियों को लागू कर सकते हैं। व्याख्यान के दौरान उन्होनें कहा कि हमें प्रश्न पूछने की संस्कृति को बढ़ावा देना, आकर्षक, वास्तविक दुनिया की समस्याएँ डिजाइन करना,

सहयोगात्मक शिक्षण को शामिल करना, विविध संसाधनों और उपकरणों का उपयोग करने की आवश्यकता है। हमें चाहिए कि हम संरचित जांच चरणों को लागू करें, चिंतन के अवसर प्रदान करें, प्रगति का आकलन करें और प्रतिक्रिया दें, स्वामित्व और स्वायत्तता को प्रोत्साहित करें

- **The importance of science literacy and public understanding of science.**

विज्ञान साक्षरता क्यों मायने रखती है के विषय में डॉ रेणु बाला जी ने कहा कि विज्ञान साक्षरता और विज्ञान की सार्वजनिक समझ एक सुविज्ञ समाज के लिए महत्वपूर्ण है जो सही निर्णय लेने और वैज्ञानिक प्रगति के लाभों को अपनाने में सक्षम हो। शिक्षा में निवेश करके, जनता के साथ जुड़कर और जिज्ञासा को बढ़ावा देकर, हम एक ऐसा भविष्य बना सकते हैं जहाँ विज्ञान को सभी द्वारा महत्व दिया जाए और समझा जाए। आइए हम एक वैज्ञानिक रूप से साक्षर समाज को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करें जो हमारी दुनिया की जटिलताओं को आत्मविश्वास और स्पष्टता के साथ नेविगेट कर सके।

- **Role of Science education in developing critical thinking and problem solving skills.**

श्रीमति रेणू बाला ने विज्ञान शिक्षा केवल तथ्यों को याद करने या जटिल सिद्धांतों को समझने के बारे में नहीं है। इसके मूल में, यह एक मानसिकता विकसित करने के बारे में है – एक ऐसा सोचने का तरीका जो जिज्ञासु, विश्लेषणात्मक और नए विचारों के लिए खुला हो। यह छात्रों को आवश्यक कौशल प्रदान करता है जो कक्षा की सीमाओं से बहुत आगे तक फैले होते हैं और उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन पर स्थायी प्रभाव डालते हैं। विज्ञान शिक्षा छात्रों को अपने आस–पास की दुनिया पर सवाल उठाने के लिए प्रोत्साहित करती है। दूसरा, विज्ञान शिक्षा समस्या–समाधान कौशल को बढ़ावा देती है।

उदाहरण के लिए, जब छात्र किसी वैज्ञानिक परियोजना पर काम करते हैं, तो उन्हें चुनौतियों और बाधाओं का सामना करना पड़ता है। वे अपनी रणनीतियों को अनुकूलित करना, वैकल्पिक समाधान खोजना और कठिनाइयों का सामना करना सीखते हैं। यह प्रक्रिया न केवल लचीलापन बनाती है बल्कि समस्या–समाधान की मानसिकता भी पैदा करती है जो किसी भी क्षेत्र या स्थिति में अमूल्य है।

❖ **11 अप्रैल 2024**

महाविद्यालय में डॉ. रणजीत कौर द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय **'ICT Mediated Pedagogies and Digital Divide'** रहा।

डॉ. रणजीत कौर ने कहा कि आज हम शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़े हैं, जहाँ सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) हमारे पढ़ाने और सीखने के तरीके को नया आकार दे रही है। ICT–मध्यस्थ शिक्षाशास्त्र कक्षाओं को गतिशील वातावरण में बदल रहा है, जिससे इंटरैक्टिव और व्यक्तिगत सीखने के अनुभव को बढ़ावा मिल रहा है।

ICT–मध्यस्थ शिक्षाशास्त्र शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं को बढ़ाने के लिए डिजिटल उपकरणों और संसाधनों का उपयोग करते हैं। ये शिक्षाशास्त्र आकर्षक और प्रभावी शैक्षिक अनुभव बनाने के लिए इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड, ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म और शैक्षिक ऐप जैसी विभिन्न तकनीकों को शामिल करते हैं। इन उपकरणों के एकीकरण से कई लाभ मिलते हैंः बढ़ी हुई सहभागिता व व्यक्तिगत शिक्षण।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि आईसीटी–मध्यस्थ शिक्षाशास्त्र के लाभ समान रूप से वितरित किए जाएँ, हमें डिजिटल डिवाइड को पाटने के लिए जानबूझकर और समन्वित कार्रवाई करनी चाहिए।

बुनियादी ढाँचे में निवेश करें, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दें, समावेशी नीतियों का समर्थन करें, सहयोग को बढ़ावा दें।

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि हम एक ऐसे भविष्य का निर्माण करने के लिए मिलकर काम करें जहाँ प्रौद्योगिकी एक बाधा के बजाय एक पुल के रूप में काम करे, जिससे सभी के लिए एक समावेशी और न्यायसंगत शैक्षिक परिदृश्य तैयार हो।

❖ **12 अप्रैल 2024**

महाविद्यालय में डॉ. शमशीर सिंह द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय **'Holistic and Multidisciplinary Education in the context of NEP-2020'** रहा।

डॉ. शमशीर ने कहा कि एनईपी–2020 के केंद्र में समग्र शिक्षा की अवधारणा है। यह दृष्टिकोण पारंपरिक शैक्षणिक शिक्षा से परे है, छात्रों के समग्र व्यक्तित्व के विकास पर जोर देता है। समग्र शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने के बारे में नहीं हैय यह छात्रों के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास को

बढ़ावा देने के बारे में है। इस नीति के तहत, आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को पोषित करने पर जोर दिया गया है। NEP–2020 बहुविषयक शिक्षा की अवधारणा को भी बढ़ावा देता है। यह दृष्टिकोण मानता है कि वास्तविक दुनिया की समस्याएँ अकादमिक श्रेणियों में ठीक से फिट नहीं होती हैं। बहुविषयक दृष्टिकोण को अपनाकर, हम छात्रों को कई दृष्टिकोणों से जटिल चुनौतियों से निपटने की क्षमता से लैस कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने के लिए विज्ञान, नीति, अर्थशास्त्र और सामाजिक व्यवहार के ज्ञान की आवश्यकता होती है। एक बहुविषयक शिक्षा छात्रों को अध्ययन के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ने की अनुमति देती है, जिससे अभिनव समाधान और मुद्दों की अधिक व्यापक समझ को बढ़ावा मिलता है।

NEP–2020 के कार्यान्वयन में कई प्रमुख रणनीतियाँ शामिल हैं। सबसे पहले, पाठ्यक्रम को अधिक लचीला बनाने के लिए फिर से डिजाइन किया जाएगा, जिससे छात्र अपनी रुचियों और करियर लक्ष्यों के साथ संरेखित विषयों को चुन सकेंगे। यह लचीलापन छात्रों को विविध क्षेत्रों का पता लगाने और व्यापक कौशल सेट विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

शिक्षकों, नीति निर्माताओं और हितधारकों के रूप में, इस दृष्टिकोण को अपनाना और इसके सफल कार्यान्वयन की दिशा में काम करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

❖ **18 अप्रैल 2024**

महाविद्यालय में डॉ. रीना द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय '**Research Writing**' रहा। डॉ. रीना ने शोध लेखन के महत्व को कई कारणों से महत्वपूर्ण बताया। ज्ञान की उन्नति व शोध लेखन, समस्या–समाधान, आलोचनात्मक सोच। शोध लेखन में कई चरण हैं। प्रभावी शोध लेखन, विषय चुनना, साहित्य समीक्षा करना शोध प्रश्न या परिकल्पना तैयार करना, शोध पद्धति को डिजाइन करना, संशोधन और संपादन व स्पष्टता। इसके अतिरिक्त उन्होंने शोध लेखन में चुनौतियाँ पर भी चर्चा की। एक अनूठा विषय ढूँढना, संसाधनों तक पहुँचना, समय प्रबंधन व शोध लेखन, निष्पक्षता बनाए रखना, नैतिक मानकों का पालन करना।

❖ **10 मई 2024**

महाविद्यालय में श्री रवि कुमार द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय '**Enhancing Capabilities in Office Management**' रहा।

❖ **01 जनू 2024**

महाविद्यालय में डॉ. राज कुमार द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय **'NAAC and NEP Implementation'** रहा। डॉ. राज कुमार ने कहा कि वे दो महत्वपूर्ण तत्वों पर चर्चा करने के लिए आये हैं जो भारत में उच्च शिक्षा के परिदृश्य को बदल रहे हैं। राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (NAAC) और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का कार्यान्वयन। ये पहल हमारे देश में शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद का प्राथमिक उद्देश्य उच्च शिक्षा संस्थानों का मूल्यांकन और प्रत्यायन करना है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे शिक्षण, सीखने, शोध और बुनियादी ढाँचे में गुणवत्ता मानकों को पूरा करते हैं। NAAC शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गुणवत्ता आश्वासन, संस्थागत सुधार, जवाबदेही और पारदर्शिता, वैश्विक मान्यता, NAAC कई मानदंडों के आधार पर संस्थानों का मूल्यांकन करता है, जिनमें शामिल हैं। पाठ्यक्रम संबंधी पहलू, पाठ्यक्रम का डिजाइन और कार्यान्वयन, शिक्षण–अधिगम और मूल्यांकनरू शिक्षण विधियों, संकाय और मूल्यांकन प्रक्रियाओं की गुणवत्ता, अनुसंधान, नवाचार और विस्तार व संस्थान का अनुसंधान आउटपुट, नवाचार और सामुदायिक जुड़ाव। बुनियादी ढाँचा और शिक्षण संसाधन, शासन, नेतृत्व और प्रबंधनरू संस्थागत शासन और प्रबंधन प्रथाओं की प्रभावशीलता, संस्थागत मूल्य और सर्वोत्तम प्रथाएँ। आपने आगे कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 एक व्यापक रूपरेखा है जिसका उद्देश्य 21वीं सदी की मांगों को पूरा करने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली को बदलना है। यह शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला, बहु–विषयक और शिक्षार्थियों और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने पर केंद्रित है। एनईपी 2020 की मुख्य विशेषताएं पर भी विचार व्यक्त किये।

निष्कर्ष के तौर पर, NAAC और NEP 2020 परिवर्तनकारी पहल हैं जो भारत में उच्च शिक्षा में क्रांति लाने की क्षमता रखते हैं।

यह इतना सब कुछ करना हमारे लिए तभी सम्भव हो पाया जब प्रबन्धक समिति के सदस्य हर कदम पर हमारे साथ थे। हम सभी हृदय से उनके सहयोग के आभारी हैं। हम छात्राध्याकों की सोचने समझने की क्षमता में जो वृद्धि हुई है वह हमारी आदणीय अध्यक्षा सुश्री कुमुद बंसल जी के सहयोग से हुई। हमारे उपाध्यक्ष श्री अरविन्द बंसल जी एवं श्री पंकज बंसल जी ने सदैव सहज भाव व तत्परता से हमारी सब उलझनों को सुलझाया। हम इनके आभारी हैं। हम सभी अपने अध्यापक वर्ग व महाविद्यालय के अन्य सभी कर्मचारियों के आभारी हैं कि उनके प्रयासों से हमारा अध्ययन–काल बहुत प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत हुआ।

आदरणीय अभिभावक व राशोबियनस, हम इस बात में विश्वास रखते हैं कि जितना दिखाया जाये उससे कहीं अधिक अपने पास हो। अभी भी बहुत कुछ ऐसा छूट गया होगा, जो हम आपको बताना चाहते थे।

जो छात्र यहाँ से पढ़ेंगे उनके व्यक्तित्व में एक सकारात्क परिवर्तन आयेगा, जो आजीवन उन्हें सद्मार्ग पर ले जायेगा तथा अन्य मानव व प्रकृति के साथ शांतिमय ढ़ंग से जीना सिखायेगा।

राशोबा शिक्षण महाविद्यालय आप सभी की उन्नति की कामना करता है। आपने अपने जीवन में जो लक्ष्य निर्धारित किया है, वो आप प्राप्त करें। आप सभी स्वस्थ रहें। हम सब आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

जय हिन्द!